# मध्यवर्गीय जीवन एवं पारिवारिक विघटन : एक विश्लेषण

**राघवेन्द्र सिंह,**

*शोधछात्र–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग*

*डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीयपुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ*

कमलेश्वर व राजेन्द्र यादव के कथा–साहित्य के केन्द्र में पूरी तरह से मध्यवर्गीय जीवन और उसकी समस्याएँ हैं। समूचे हिन्दी कथा–साहित्य में 'उपेक्षित वर्ग' इनके कथा–साहित्य के केन्द्र में आ गया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में औद्योगीकरण, अस्मिता–बोध तथा पाश्चात्य जीवन–शैली फलस्वरूप आर्थिक दबाव, पीढ़ीगत संघर्ष, पारिवारिक विघटन जैसी जटिल स्थितियाँ उत्पन्न हुई। कमलेश्वर व राजेन्द्र जी ने जड़ मूल्यों से जूझते, आर्थिक अभाव से त्रस्त अनेक पात्रों की विविध मनःस्थितियों का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है।

मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं पारिवारिक विघटन के केन्द्र में मुख्यतः अर्थ और बदलते जीवन मूल्य हैं। अर्थाभाव तथा नयी एवं पुरानी पीढ़ी के संस्कारों–मूल्यों के संघर्ष के कारण– "अधिकांश संयुक्त परिवार केवल पारस्परिक ईष्या–द्वेष और कलह के केन्द्र बन कर रह गए हैं तथा उनमें सदस्यों की मानसिक शांति समाप्त हो चुकी है।"[1]

कमलेश्वर का उपन्यास 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' मध्यवर्गीय आर्थिक जीवन संघर्ष के कारण बिखरते परिवार की संवेदनाओं को बड़ी गहराई और सशक्तता से टाँकता है। अर्थाभाव के कारण परिवार का मुखिया होने के बावजूद श्यामलाल का अपने ही परिवार में हो रहे निर्णयों से किनारे होते जाना और फालतू बनकर रह जाना मन में एक गहरी टीस उत्पन्न करता है– "धीरे–धीरे फैसले लेने की ताकत तारा में समाती जा रही है। घर में किसे क्या जरूरत है और वह जरूरत जायज है या नहीं– इसका निर्णय भी उनके पास नहीं रह गया है। वह सिर्फ एक फालतू चीज की तरह रह गये हैं, जिसे फेंका नही जा सकता, सिर्फ बर्दाश्त किया जाता है।[2]" वीरन की मृत्यु और अर्थाभाव के कारण श्यामलाल का परिवार पूरी तरह बिखर जाता है। कमलेश्वर का 'तीसरा आदमी' में महानगरीय परिवेश की मध्यवर्गीय अर्थाभाव की बिडम्बनात्मक परिस्थितियाँ दाम्पत्य सम्बन्धों तक में कटुता और बिखराव जन्म देती हैं। नरेश और चित्रा के मध्य गायब होती मधुरता का कारण 'आर्थिक संघर्ष के कारण चित्रा की इच्छाओं की पूर्ति न कर पाने की विवशता' ही है। नायक नरेश का विवशता में यह मान लेना कि– "जैसा कुछ भी है, ठीक ही है..... आखिर चित्रा इतनी कठिनाइयों में मेरे साथ गुजारा कर रही है।[3]" इन्हीं स्थितियों की ओर संकेत करता है। इनमें पीढ़ीगत संस्कार एक महत्वपूर्ण कारक है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में श्यामलाल अपनी पुत्रियों तारा और समीरा का घर से बाहर निकलना और नौकरी करना सहन नहीं कर पाते हैं जिससे सम्बन्धों की मधुरता छीजती जाती है। राजेन्द्र यादव का उपन्यास 'सारा आकाश' भी एक ऐसे निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कथा कहता है जो पुरातन एवं नवीन पीढ़ियों के संघर्ष एवं अर्थाभाव के कारण बिखर रहा है। निम्न आर्थिक स्थिति के कारण परिवार में सम्बन्धहीनता एवं संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है फलतः पारिवारिक सदस्यों के बीच रागात्मकता गायब हो जाती है।

उपन्यासकार को इन प्रवृत्तियों की सही पहचान है तभी तो वह शिरीष से कहलवाता है कि– "लड़ाई–झगड़ा, खींचतान, बदला, ग्लानि सब मिलाकर वातावरण ऐसा विषैला और दमघोंटू बना रहता है कि आप साँस न ले सकें। कारण आर्थिक ही है यह आप भी जानते हैं। नतीजे में हम दो हिस्सों में बँटे रहते हैं– बाहर अपनी आर्थिक लड़ाई लड़ी और भीतर अपनी पारिवारिक उलझनें सुलझाओ।[4] राजेन्द्र जी का दूसरा उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' भी वस्तुतः युवा पीढ़ी का जड़ मूल्यों से जूझने और अर्थाभाव के कारण कहीं भी जम न पाने की विवशता का ही चित्रण करता है।

राजेन्द्र जी की 'तीन पत्र और आलपीन' कहानी में अर्थाभाव के कारण सिर्फ पति–पत्नी ही नही, माता–पिता और पुत्र भी टूटते हैं। शादी हो जाने के बाद शिक्षित, बेरोजगार युवक की स्थिति घर में बिडम्बनात्मक हो जाती है। बहुत प्रयास करने पर भी नौकरी न मिलने के कारण उसे पिता द्वारा ताने सुनने पड़ते हैं– "जब मुफ्त का, बिना हाथ–पैर हिलाए खाना मिले, तो जरूरत क्या है किसी को? बाप है, जिंदगी भर खिलाया; और खिलाएगा; चोरी करे, भीख माँगे, लेकिन तुम्हे तो खिलाएगा ही, कहीं से लाकर खिलाए।[5]" तंग आकर पुत्र घर से भाग जाता है। घरवाले उसकी पत्नी को मायके भेज देते हैं। माँ पुत्र के ध्यान में बीमार पड़ती है और पिता की स्थिति पागलों जैसी हो जाती है। आर्थिक अभाव के कारण पूरा परिवार छिन्न–विछिन्न हो जाता है। राजेन्द्र जी की 'टूटना' कहानी में आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पति–पत्नी के सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न होता है परिणामतः परिवार टूटता है। 'साइकिल' कहानी में आर्थिक संघर्ष के कारण पति का अपने मित्र से स्वार्थी सम्बन्ध पत्नी को अच्छा नही लगता, फलतः उनके सम्बन्धों में दरार पैदा होती है। कमलेश्वर की कहानियों में भी मध्य वर्ग की आर्थिक यंत्रणाएँ और जीवन–संघर्ष पूरी शिद्दत से चित्रित हुआ है। 'देवा की माँ', 'इतने अच्छे दिन', 'धूल उड़ जाती है', 'गर्मियों के दिन', 'बयान', 'जोखिम', 'माँस का दरिया', 'राजा निरबंसिया' तथा अन्य कई कहानियों में मध्य वर्ग के दुःख–दर्द, आर्थिक विषमताओं में पिसते मनुष्य का चित्रण हुआ है। 'देवा की माँ' में देवा की माँ दरियाँ बुनकर पेट पालती है। आर्थिक बदहाली के कारण उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है– ''जब वापस आता तो धूप चढ़ आई होती, दोपहरी तपती होती और माँ पटिया पर सूत रखे, हाँफते–हाँफते कूटती होती। बालों की लटें रूखी–सी झूलती होती, बाँहों की नसें सूत–सी उभर आतीं और उसके हाथ रंग से बदरंग होते।[6]

'गर्मियों के दिन' में मरीज के इंतजार में सारी दुपहरी बिना भोजन के गुजार देने वाले बेकार वैद्यराज की विवशता कचोटती है तो 'धूल उड़ जाती है' की नसीबन का जीवन–संघर्ष मानव–जिजीविषा की प्रतीक बन जाता है। 'इतने अच्छे दिन' का बाला अर्थाभाव में मनुष्य की हड्डियों का व्यापारी बन जाता है और अपने ही परिवार के लोगों के मरने पर उनकी हड्डियों को जलाने नही देता– "और बापू चीखा था– अरे कमीने! तू हड्डियाँ भी बेच खाएगा, ऐसी औलाद से तो निपूता ही मरता[7]" और अपनी विवशता पर वह सोचता है– "बापू ने जो कुछ कहा हो, पर ये दिन कैसे आते अगर बापू की बात मान लेता! खाने को क्या था ? जीने को क्या था ? सब तरफ तो धरती झुलसी पड़ी थी।[8]" इसी तरह 'नौकरीपेशा' के बाबू राधेलाल काम की तलाश में हर दफ्तर की धूल फाँकते हैं तो 'दूसरे' की सुनीता के परिवार के सारे निर्णय धन के अभाव में दूसरे लोग ही लेते हैं और इस परिवार पर थोप देते हैं। 'जोखिम' कहानी की माँ और बेटे अपने–अपने स्तर पर जिन्दगी की तल्खियों को बरदाश्त करते हैं। इन सब पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय मनुष्य की आर्थिक विषमताओं से भरी जिंदगी की सही तस्वीर सामने आती है।

मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष और पारिवारिक विघटन के मूल में आर्थिक संघर्ष के साथ–साथ पीढ़ीगत संघर्ष भी है। प्रत्येक पीढ़ी अपने समय में उम्र और विचारों में नई होती है। अगली पीढ़ी तथा पिछली पीढ़ी के विचार– दृष्टिकोण अलग–अलग होते हैं फलतः उनमें टकराव होता है और पारिवारिक विघटन होता है। राजेन्द्र यादव की कहानी 'बिरादरी बाहर' में पारस बाबू की बेटी मालती अपने से नीची जाति के लड़के से शादी कर लेती है और इस कार्य में उनके बेटे–पत्नी भी मालती का साथ देते हैं। परम्परागत संस्कारों वाले पारस बाबू बेटी को घर से बेदखल करना चाहते हैं किन्तु स्वयं ही बिरादरी बाहर हो जाते हैं। 'पासफेल' कहानी में प्रोफेसर भार्गव की बेटी बीना गैर जाति के लड़के वीरेन्द्र से प्यार करती है। वे इसका विरोध करते हैं किन्तु पत्नी और बच्चे उनका मजाक उड़ाते हैं। इसी सब तनाव के कारण– "उन्हें हमेशा ऐसा लगता है जैसे वे ही उस तनाव का केन्द्र हैं। मानो उनके और बाकी परिवार के बीच में एक दूरी आ गयी है, जिसे वे हर क्षण समझते हैं, शब्द नहीं दे पाते।[9]" 'वृक्ष' में तो भाई ही बहन का कत्ल कर देता है। 'तलवार पंचहजारी' में पिता गजराज सिंह का अपनी उपाधि और तलवार से प्रेम परम्परागत मूल्यों से जुड़े होने का प्रतीक है तो लालू का घर से भाग जाना और तलवार को तोड़ देना पुराने मूल्यों से घृणा का प्रतीक है– "मेरी दोनों हथेलियों में घाव हो गये हैं, वे लहूलुहान हो गयी हैं, लेकिन मैंने उस पंचहजारी तलवार को तोड़ दिया है! तोड़ दिया है न .....।[10]"

कमलेश्वर की कहानियों में पीढ़ीगत संघर्ष का चित्रण प्रमुखता से हुआ है। 'नागमणि' का हिन्दी शिक्षक विश्वनाथ अपनी अगली पीढ़ी में हिन्दी के प्रति निष्ठा न पाकर विद्रोही हो जाता है तो 'ऊपर उठता हुआ मकान' के मुरारी बाबू पीढ़ियों के अंतराल के कारण अपने बेटे के लिए फालतू हो जाते हैं। 'तलाश' में पीढ़ीगत मूल्यों का नया रूप सामने आता है तो 'देवा की माँ' में देवा को माँ के व्यवहार– जिसमें वह पति से मिलने के लिए इनकार करती है तो दूसरी तरफ पति की कुशलता के लिए पूजा–अर्चना भी करती है– पर आश्चर्य होता है। 'तीन दिन पहले की रात' का दिवाकर पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के मूल्यों के सम्बन्ध में स्पष्ट कह देता है– "नौजवानों की फिक्र आपको नहीं होनी चाहिए। उनके प्रति जो रुख आप लोगों, यानि पुरानी पीढ़ी का है, वह कितना निकम्मा और बोदा है यह खुद आप भी जानते हैं। बड़े गलत पैमाने बना रखे हैं आप लोगों ने। ..... अपनी सार्थकता के लिए आज का नौजवान जिस मानसिक संघर्ष से गुजर रहा है, वह कितना चिन्तित है, यह आपने नही देखा। ..... यह आपकी पीढ़ी का दृष्टिदोष है। आप लोग सिर्फ अपने जीवन का नमूना पेश करते हैं, अपने विचारों को अंतिम मानते हैं।[11]"

इस प्रकार मध्यवर्गीय व्यक्ति की जिन्दगी की आर्थिक विवशता, निरुपायता तथा पीढ़ीगत मूल्यों के द्वन्द्व के कारण पारिवारिक विघटन की विविध स्थितियाँ कमलेश्वर व राजेन्द्र जी के कथा–साहित्य में विभिन्न रूपों में चित्रित हुई हैं।

दाम्पत्य सम्बन्धों में बिखराव– कमलेश्वर व राजेन्द्र यादव के कथा–साहित्य का सर्वाधिक सशक्त और बहुआयामी पक्ष है नर–नारी और पति–पत्नी संबंधों का चित्रण। आधुनिक युग में बदली परिस्थितियों के कारण जहाँ विवाह सम्बन्धी पुरातन मान्यताएँ परिवर्तित हुई वहीं स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में नयी नैतिकता का विकास हुआ फलतः दाम्पत्य सम्बन्धों में असंतोष, टूटन और बिखराव की स्थितियाँ उत्पन्न हुई। इस असंतोष और बिखराव का प्रमुख कारण– दाम्पत्य सम्बन्धों के मध्य तीसरे व्यक्ति का आना है। यह तीसरा व्यक्ति कभी स्त्री रूप में आता है तो कभी पुरुष रूप में तथा कभी–कभी आर्थिक दबाव के रूप में। इस सम्बन्ध में डॉ0 अरुणा गुप्ता का

कथन उचित लगता है– "पारम्परिक मूल्य मान्यताओं के विघटन, नवीन मूल्य स्थितियों एवं पति–पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों में निष्ठा एवं सौहार्द्र के अभाव के कारण 'पर पुरुष' अथवा 'पर स्त्री' के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा। परिणामतः दाम्पत्य सम्बन्ध प्रेम के त्रिकोण में उलझने लगे जिसके कारण परिवारों में बिखराव एवं अलगाव ने जन्म लिया।[12]"

कमलेश्वर व राजेन्द्र जी ने अपने कथा–साहित्य में दाम्पत्य सम्बन्धों में आ रही कटुता तथा बिखराव को विविध रूपों में चित्रित किया है। कमलेश्वर के उपन्यास 'पति पत्नी और वह' में पति रंजीत की परस्त्री लोलुपता के कारण पत्नी शारदा भी नौकरी कर लेती है जिसके कारण दाम्पत्य सम्बन्धों में दरार उत्पन्न हो जाती है। 'अनबीता व्यतीत' की कथा–नायिका समीरा का अपने पति की रुचियों–संस्कारों से मेल नही खाता, परिणामतः समीरा पति से अलग रहने का निर्णय लेती है और मायके चली जाती है– "इसका मतलब है कि हम दोनों के बीच सम्मानपूर्ण समझदारी की कोई गुंजाइश नहीं है ... .. मैं नही चाहूँगी कि आप मेरी वजह से किसी भी तरह के टेंशन में रहें ..... इसलिए मैं सुबह ही सुमेरगढ़ चली जाऊँगी।[13]" एक–दूसरे की भावनाओं– विचारों में सामंजस्य का न हो पाना उनके दाम्पत्य सम्बन्ध में बिखराव का कारण बनता है। 'वही बात' में पति प्रशान्त के अपने सरकारी कार्यों में उलझे होने के कारण पत्नी समीरा का एकान्त निरन्तर गहरा होता जाता है। अपनी दमित होती भावनाओं की पूर्ति के लिए समीरा तीसरे व्यक्ति नकुल के साथ रहने का फैसला करती है और उनका दाम्पत्य–सम्बन्ध टूट जाता है। 'तीसरा आदमी' में भी नरेश–चित्रा की विडम्बनात्मक आर्थिक परिस्थितियों के बीच उनके जीवन में तीसरे व्यक्ति सुमन्त का आना उनके दाम्पत्य–सम्बन्धों की मधुरता लील लेता है। संवेदनहीन और घुटन भरे वातावरण से ऊबकर अन्ततः नरेश, चित्रा से सम्बन्धों को तोड़ने का निर्णय लेता है– "अब हमारे–तुम्हारे सम्बन्धों का कोई अर्थ नहीं रह गया है।[14]" तीसरे व्यक्ति के कारण उनका दाम्पत्य–सम्बन्ध बिखर जाता है।

राजेन्द्र जी ने दाम्पत्य–सम्बन्धों को अधिक व्यावहारिक धरातल पर रखकर चित्रित किया है। उनकी कथा–चेतना दाम्पत्य–सम्बन्धों के संक्रमण एवं संकट को ही चित्रित नही करती, उन्हें एक –दूसरे से अलग होने और रहने की स्थिति में भी जाँच लेना चाहती है और पाती है कि मूल्यों का यह चतुर्दिक रुँधाव कितना सांघातिक और निर्णायक है। 'मंत्रविद्ध' उपन्यास में तारक–सुरजीत घर से भागकर गैर परम्परागत विवाह कर लेते हैं। सुरजीत द्वारा साथ लाये गये रुपये–जेवर समाप्त हो जाने पर अर्थाभाव के कारण उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। तारक सुरजीत को विवश करता है कि वह अपने पिता को पत्र लिखकर पैसे माँगे। इस पर सुरजीत भड़क जाती है– "मैं मर भी जाऊँगी तो नही लिखूँगी? क्यों लिखूँ, इसी बूते पर घर छोड़कर आयी थी ?[15]" बारम्बार यह लड़ाई उनके आपसी सद्भाव को नष्ट कर देती है। सुरजीत के अथक प्रयासों के उपरान्त भी उनका दाम्पत्य–जीवन असफल हो जाता है। 'एक इंच मुस्कान' में लेखक पति अमर के पास उसकी प्रशंसिकाओं विशेषकर अमला का पत्र आना पत्नी रंजना सहन नही कर पाती। वह पति पर संदेह करती है– "तुम साफ–साफ क्यों नही कह देते कि तुम (अमला) से प्यार करने लगे हो? इसीलिए अब मैं तुम्हें अच्छी नही लगती..... यह घर अच्छा नहीं लगता, कुछ भी अच्छा नही लगता।[16]" तीसरा व्यक्ति अमला उनके सम्बन्धों में जहर घोल देता है। अविश्वास और तनाव की स्थितियों में रंजना अमर को छोड़कर चली जाती है और उनका दाम्पत्य–सम्बन्ध बिखर जाता है। 'कुलटा' उपन्यास की मिसेज तेजपाल पति के साथ अभावात्मक सम्बन्धों तथा यौन–अतृप्ति के कारण संभवतः वायलिन सिखाने वाले के साथ भाग

जाती है और उनका दाम्पत्य–सम्बन्ध टूट जाता है।

पहले स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का एकमात्र केन्द्र होता था– पुरुष। हर बात पुरुष के दृष्टिकोण से कही–सुनी या समझी जाती थी। लेकिन आधुनिक परिवेश की बदलती परिस्थितियों में कमलेश्वर व राजेन्द्र जी के कथा–साहित्य में स्त्री अपनी पूर्ण स्वतंत्र सत्ता स्थापित करती नजर आती है– पूरी चमक–दमक, विचार और व्यक्तित्व के साथ। किन्तु नारी के प्रति पुरुष के नजरिये में परिवर्तन होता नजर नही आता। डॉ0 भगवानदास वर्मा लिखते हैं– "पुरुष अब भी अपने स्वार्थ और पूर्वाग्रहों पर खड़ा हुआ है। ..... स्त्री–चरित्र को लेकर उसके मन में आत्मविश्वास की कमी है।17" इसी के कारण दाम्पत्य–सम्बन्धों में टकराहट–बिखराव हो रहा है। कमलेश्वर और राजेन्द्र जी की कहानियों में यह प्रवृत्ति गहराई से लक्षित होती है।

कमलेश्वर की कहानियों में दाम्पत्य–सम्बन्धों की यह दरकन या असंतोष कभी प्रेम की असफलता के कारण है तो कभी आर्थिक कारणों से, या कभी तीसरे व्यक्ति के कारण। 'जो लिखा नही जाता' में तीसरा आदमी चन्दर, सुदर्शना और महेन्द्र का दाम्पत्य –सुख लील लेता है और अन्ततः दोनों अलग हो जाते हैं। 'आत्मा की आवाज' में मध्यवर्गीय दाम्पत्य की घुटन, बेबसी, ठहराव, खामोशी और उसमें ऊबती हुई आत्मा की झलक मिलती है। 'या कुछ और' कहानी में रामनाथ और उसकी पत्नी के सुख के बीच प्रौढ़वय की शंकुतला का आकर्षण आ जाने से दाम्पत्य–सम्बन्धों में कड़वाहट आ जाती है। 'सीखचें' का दाम्पत्यगत असंतोष अनमेल विवाह से उत्पन्न है। 'तीन दिन पहले की रात' में नायिका शादी से पूर्व दिवाकर से प्यार करती है किन्तु उससे शादी नही हो पाती। उसकी टीस इन शब्दों में बयाँ होती है– "यह नारी स्वतंत्रता हाथी के दाँत हैं, जिन्हें हर घराना खूबसूरती के लिए लगाए हुए है! सारी लड़कियाँ स्वतन्त्र हैं, वे प्यार कर सकती हैं, घृणा कर सकती हैं, लेकिन जो चाहती हैं वह नहीं कर सकतीं।[18]" मनचाहे पुरुष से विवाह न हो पाने के कारण मीना का दाम्पत्य असंतोष, घुटन से भर जाता है। 'राजा निरबंसिया' के पति–पत्नी जगपति और चन्दा के दाम्पत्य सुख को कर्ज का विषधर डस जाता है। आर्थिक विवशता में तीसरे व्यक्ति कम्पाउण्डर का उनके जीवन में प्रवेश करना ही उनके दाम्पत्य–सम्बन्धों में बिखराव का कारण बनता है। 'बयान', 'देवा की माँ' आदि कहानियाँ भी इसी दाम्पत्य–बिखराव की पीड़ा–बोध का चित्रण करती हैं।

राजेन्द्र जी की कहानियों में दाम्पत्य–सम्बन्धों में बिखराव के मूल कारणों में तीसरे व्यक्ति का आना तथा आर्थिक दबाव ही मुख्य है। 'पुराने नाले पर नया फ्लैट' कहानी में पति–पत्नी के बीच पति की स्त्री–मित्र के आ जाने से उनका दाम्पत्य–जीवन बिखराव की स्थिति में पहुँच जाता है। 'अनुपस्थित सम्बोधन' में पत्नी के प्रेमी के कारण दाम्पत्य–सम्बन्ध ही नही टूटता अपितु पति आत्महत्या भी कर लेता है– "मुझे तो यही लगता है कि पापा ने इसी वजह से आत्महत्या कर ली थी। उनके हार्टफेल वाली बात एकदम झूठ है। जब तेज अंकल आ जाते थे तो पापा रात–रात भर या तो क्लबों में पड़े रहते थे या दोस्तों के यहाँ....।[19]" 'पेट्रोल पम्प' में पति को अपने बच्चे में पत्नी के प्रेमी की तस्वीर दिखाई देती है। उसका यह संदेह उनके दाम्पत्य–जीवन में कड़वाहट और घुटन भर देता है। 'टूटना' कहानी में लीना और किशोर कोर्ट मैरिज करते है। शादी के उपरांत लीना को पढ़ाने वाले मेहता के साथ सम्बन्धों को लेकर पति–पत्नी में तकरार होती हैं तब लीना कहती है– "देखो किशोर, आज से, बल्कि इसी क्षण से हम लोग साथ नहीं रहेंगे। मैं भी सोच रही थी कि अब तुमसे बात कर ही ली जाए।[20]" अंततः दोनों अलग होने का फैसला लेते हैं और उनके सम्बन्ध टूट जाते हैं।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' में पति लोकेश के मन में पत्नी सविता के पूर्व प्रेमी–प्रमोद के साथ सम्बन्धों को लेकर संशय है। लोकेश सविता द्वारा प्रमोद को खाने पर आमंत्रित करता है और उसे जहर देने को कहता है किन्तु सविता प्रमोद को जहर देते समय बेहोश हो जाती है, जिससे लोकेश का संशय और गहरा तथा पुष्ट होता है। 'तीन पत्र और आलपीन' कहानी में आर्थिक दबाव के कारण सिर्फ पति–पत्नी संबंध ही नहीं टूटते, पुत्र और माता–पिता का रिश्ता भी टूट जाता है। बेरोजगारी, अर्थाभाव की स्थिति तथा पिता द्वारा ताना मारने पर युवक घर छोड़कर भाग जाता है। कुछ समय बाद पत्नी को घर से निकाल दिया जाता है। पत्नी पत्र के माध्यम से पति से पूँछती है– "मुझे बता तो दो– तुम्हें नौकरी नहीं मिली, तुम बेकार रहे, उन्होंने तुम्हें पढ़ाया, उन्होंने तुमसे आशाएँ कीं– क्या उस सबके लिए कसूरवार मैं ही थी? मेरे दिल में कम आशाएँ थीं? मेरे मन में सपने नहीं थे क्या?[21]" इस प्रकार आर्थिक दबाव के कारण दाम्पत्य–सम्बन्ध तथा पूरा परिवार छिन्न–भिन्न हो जाता है। इसी प्रकार 'पहली कविता', 'तनाव' तथा 'साइकिल' जैसी कहानियों में भी प्रेम–सम्बन्धों अथवा आर्थिक मजबूरियों के कारण दाम्पत्य– सम्बन्धों में घुटन, तनाव तथा टूटन की स्थितियों का राजेन्द्र जी ने मार्मिक चित्रण किया है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


1. काम सम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी, डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना, पृ0 255
2. समुद्र में खोया हुआ आदमी, कमलेश्वर, पृ0 8
3. तीसरा आदमी, कमलेश्वर, पृ0 29
4. सारा आकाश, राजेन्द्र यादव, पृ0 169
5. जहाँ लक्ष्मी कैद है, राजेन्द्र यादव, पृ0 58
6. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर, पृ0 155
7. वही, पृ0 649
8. वही, पृ0 649
9. प्रतिनिधि कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, पृ0 94
10. चर्चित कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, पृ0 16
11. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर, पृ0 188
12. छठे दशक के कहानी में जीवन–मूल्य, डॉ0 अरुणा गुप्ता, पृ0 194
13. अनबीता व्यतीत, कमलेश्वर, पृ0 112
14. तीसरा आदमी, कमलेश्वर, पृ0 70
15. मंत्रविद्ध, राजेन्द्र यादव, पृ0 55
16. मंत्रविद्ध, राजेन्द्र यादव, पृ0 55
17. कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ0 भगवानदास वर्मा, पृ0 231
18. समग्र कहानियाँ कमलेश्वर
19. ढोल और अपने पार, राजेन्द्र यादव, पृ0 62
20. संकलित कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, पृ0 43
21. राजेन्द्र यादव, पृ0 61


*Copyright © 2017, Raghvendra Singh. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*